INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

REET
(मुख्य परीक्षा हेतु)

Level – 2

ॐ सरस्वती मया दृष्ट्वा, वीणा पुस्तक धारणीम।

हंस वाहिनी समायुक्ता मां विद्या दान करोतु में ॐ।।

भाग – 3

सामान्य हिंदी + शिक्षण विधियाँ

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – 2 हेतु)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर (RSMSSB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – 2)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें/*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/ny6pbb

Online Order करें - https://shorturl.at/liVKO

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

हिन्दी

क्र.सं.	अध्याय	पेज नं.
1.	हिन्दी वर्णमाला ज्ञान	1
2.	शब्द विचार संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया , अव्यय	3
3.	विकारी शब्द • लिंग • वचन • काल • कारक • वाच्य • विकारी शब्दों का रूपांतरण	16
4.	शब्द के प्रकार (i) उत्पत्ति के आधार पर (ii) रचना के आधार पर (iii) अर्थ के आधार पर ▪ एकार्थी ▪ अनेकार्थी ▪ विलोम ▪ पर्यायवाची, ▪ वाक्यांश के लिए एक शब्द ▪ युग्म शब्द इत्यादि	23
5.	संधि	66
6.	समास	71
7.	उपसर्ग एवं प्रत्यय	84
8.	शब्द - शुद्धि	90
9.	वाक्य शुद्धि	95

10.	वाक्य विचार	99
11.	विराम चिह्न	103
12.	मुहावरें एवं लोकोक्तियाँ	105
13.	शब्द शक्ति	119
14.	अपठित गद्यांश	121
15.	अपठित पद्यांश	131
16.	पारिभाषिक प्रशासनिक शब्दावली	137
	शिक्षण विधियाँ ○ शिक्षण विधियाँ ○ भाषाई कौशल (सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना) ○ एवं भाषाई कौशलों का विकास ○ हिंदी भाषा शिक्षण के उपागम ○ हिंदी शिक्षण में चुनौतियाँ ○ हिंदी शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री एवं उनका उपयोग ○ भाषा शिक्षण में मूल्यांकन विधियाँ ○ निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण	150

अध्याय – 1

हिंदी वर्णमाला ज्ञान

भाषा के दो रूप होते हैं-

1. **मौखिक या उच्चारित भाषा-** मौखिक भाषा की सूक्ष्मतम इकाई ध्वनि होती है। वास्तव में ध्वनि का संबंध सुनने व बोलने से है। यह भाषा उच्चारण पर आधारित होती है। उच्चारण करने के लिए मानव के जो मुख्य-अवयव काम करते हैं वह उच्चारण अवयव कहलाते हैं।
2. **लिखित भाषा-** लिखित भाषा की सूक्ष्मतम इकाई वर्ण होती है। वर्ण का संबंध लिखने व देखने से है। वर्ण ध्वनि रूपी आत्मा का शरीर है।
   लिखित रूप से भाषा की वह छोटी से छोटी इकाई जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते हो वर्ण कहलाते हैं।
   जैसे एक शब्द है - नीला।
   नीला शब्द के यदि टुकड़े किए जाए तो वे होंगे- नी + ला
   अब यदि नी और ला के भी टुकड़े किए जाए तो वे होंगे- न् + ई तथा ल् + आ।
   अब यदि न ई, ल् आ के भी हम टुकडे करना चाहे तो यह संभव नहीं है। अतः ये वर्ण कहलाते हैं।
   ये वर्ण दो ही प्रकार के होते हैं- स्वर तथा व्यंजन
   वर्णों के मेल से शब्द बनते हैं, शब्दों के मेल से वाक्य तथा वाक्यों के मेल से भाषा बनती है। अतः वर्ण ही भाषा का मूल आधार है।
   हिंदी में वर्णों की संख्या 44 है।

वर्णों को दो भागों में बांटा जाता है

1. स्वर
2. व्यंजन

1. स्वर - स्वतंत्र रूप से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ स्वर कहलाती है, अर्थात वे वर्ण जिनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण के सहयोग की आवश्यकता नहीं होती स्वर कहलाते हैं।
स्वरों की संख्या 11 - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ
मात्राओं की संख्या 10 - क्योंकि 'अ' की कोई मात्रा नहीं होती।

2. व्यंजन - वे वर्ण जिनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण के सहयोग की आवश्यकता होती है, अर्थात स्वरों के सहयोग से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ व्यंजन कहलाती है। व्यंजनों की संख्या 33 होती है।

विशेष

1. हिंदी निदेशालय 1966 के अनुसार कुल वर्णों की संख्या 52 मानी गई है।
2. हिंदी की मानक लिपि 'देवनागरी' के अनुसार कुल वर्णों की संख्या 52 मानी गई है।

स्वरों का वर्गीकरण पाँच भागों में बांटा जाता है।

1. उच्चारण अवधि के आधार पर-

i. लघु स्वर- वे स्वर जिनके उच्चारण में कम समय लगता है, अर्थात् एक मात्रा का समय लगता है, लघु स्वर कहलाते हैं।
जैसे- अ, इ, उ, ऋ
इन्हें मूल स्वर और ह्स्व स्वर भी कहते हैं।

ii. दीर्घ स्वर- वे स्वर जिनके उच्चारण में लघु स्वरों की तुलना में दोगुना समय लगता है अर्थात दो मात्रा का समय लगता है, दीर्घ स्वर कहलाते हैं।
जैसे- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
इन्हें सन्धि स्वर भी कहते हैं।

2. ओष्ठाकृति के आधार पर –

i. वृत्ताकार स्वर- वे स्वर जिनके उच्चारण में होठों की आकृति वृत्त के समान गोल हो जाती है, वृत्ताकार स्वर कहलाते हैं।
जैसे- उ, ऊ, ओ, औ

ii. अवृत्ताकार स्वर- वे स्वर जिनके उच्चारण में होठों की आकृति वृत के समान गोल न होकर फैले रहते हैं। अवृत्ताकार स्वर कहलाते हैं।
जैसे- अ, आ, इ, ई, ऋ, ए, ऐ

3. जिह्वा की क्रियाशीलता के आधार पर:-

I. **अग्र स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा का अगला भाग क्रियाशील रहता है, अग्र स्वर कहलाते हैं।
जैसे- इ, ई, ऋ, ए, ऐ

II. **मध्य स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा का मध्य भाग क्रियाशील रहता है, मध्य स्वर कहलाते हैं।
जैसे- 'अ'

III. **पश्च स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा का पिछला (पश्च) भाग क्रियाशील रहता है, पश्च स्वर कहलाते हैं।
जैसे- आ, उ, ऊ, ओ, औ

4. मुखाकृति के आधार पर -

i. संवृत स्वर- वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख वृत्त के समान बंद-सा रहता है, अर्थात् सबसे कम खुलता है, संवृत स्वर कहलाते हैं।
जैसे- इ, ई, उ, ऊ, ऋ

ii. अर्द्ध संवृत स्वर- वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख संवृत स्वरों की तुलना में आधा बंद-सा रहता है, अर्द्ध संवृत स्वर कहलाते हैं।
जैसे- ए, ओ

iii. विवृत्त स्वर- विवृत का अर्थ होता है 'खुला हुआ', वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख्य पूरा खुला रहता है अर्थात सबसे ज्यादा खुला रहता है विवृत स्वर कहलाते हैं।
जैसे- 'आ'

iv. अर्द्ध विवृत्त - वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख विवृत स्वरों की तुलना में आधा और अर्द्ध-संवृत स्वरों की तुलना में ज्यादा खुला-सा रहता है, अर्द्ध विवृत स्वर कहलाते हैं। जैसे- अ, ऐ, औ

5. नासिका के आधार पर-

i. निरनुनासिका स्वर - वे स्वर जिनके उच्चारण में नासिका का प्रयोग नहीं किया जाता अर्थात् सिर्फ मुख से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ, निरनुनासिक कहलाती है।
जैसे- सभी स्वर

ii. अनुनासिक स्वर - वे स्वर जिनके उच्चारण में नासिका का प्रयोग किया जाता है, अर्थात मुख के साथ-साथ नासिका से भी उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ अनुनासिक। सानुनासिक कहलाती है। **जैसे-** अँ, आँ, इँ, ईं, उँ, ऊँ, ऋँ, एँ, ऐं, ओं, औं

व्यंजनों का वर्गीकरण

1. उच्चारण प्रयत्न के आधार पर-
ध्वनियों के उच्चारण में होने वाले यत्न को 'प्रयत्न' कहा जाता है। यह प्रयत्न तीन प्रकार से होते हैं-

1. **स्वरतंत्री में कंपन्न**- स्वरतंत्रियो में होने वाली कंपन्न, नांद या गूंज के आधार पर व्यंजनों के दो भेद किए जाते हैं - सघोष और अघोष
अघोष वर्ण- जिन ध्वनियों के उच्चारण में भारीपन नहीं रहता है वे अघोष ध्वनियाँ कहलाती हैं।
वर्गीय व्यंजनों के पहले व दूसरे व्यंजन अघोष होते हैं। (क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ तथा ष, श, स)।

सघोष वर्ण- जिन ध्वनियों के उच्चारण में भारीपन रहता है वे सघोष ध्वनियां कहलाती है।
वर्गीय व्यंजनों का तीसरा, चौथा और पाँचवां व्यंजन 'सघोष होता है।
(ग, घ, ड़, ज, झ, ञ, ड़, ढ़, ण, द, ध, न, ब, भ, म) अन्तः स्थ (य, र, ल, व) तथा ह । सभी स्वर भी घोष वर्ण होते हैं।

2. **श्वास वायु की मात्रा-** उच्चारण में वायु प्रक्षेप या श्वास वायु की मात्रा की दृष्टि से व्यंजनों के दो भेद है-

1. **अल्पप्राण**
2. **महाप्राण**

1. **अल्पप्राण**- जिनके उच्चारण में श्वास मुख से अल्प मात्रा में निकले और जिनमें 'हकार' जैसी ध्वनि नहीं होती, वह अल्पप्राण ध्वनियाँ कहलाती हैं। प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवा वर्ण अल्पप्राण व्यंजन है।
जैसे- क, ग, ड़, च, ज, ञ, ट, ड़, ण, त, द, न, प, ब, म।
अन्तःस्थ (य, र, ल, व) तथा सभी स्वर भी अल्पप्राण ही हैं।
2. **महाप्राण**- महाप्राण व्यंजनों के उच्चारण में 'हकार' जैसी ध्वनि विशेष रूप से रहती है और श्वास अधिक मात्रा में निकलती है। प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा वर्ण तथा समस्त ऊष्म वर्ण महाप्राण होते हैं।
जैसे- ख, घ, छ, झ, ठ, ढ़, थ, ध, फ, भ और ष, श, स, ह।

3. **मुख अवयवों द्वारा श्वास को रोकने के रूप में-**
ध्वनियों का उच्चारण करते समय हमारी जीव या अन्य मुख्य अवयव अनेक प्रकार से प्रयत्न करते हैं इस आधार पर व्यंजनों का निम्नलिखित विभाजन किया जाता है।

स्पर्शी व्यंजन- ये कंठ, तालु, मूर्धा, दंत और ओष्ठ स्थानों के स्पर्ष से बोले जाते हैं इसलिए इन्हें स्पर्शी व्यंजन कहते हैं।

उदाहरणार्थ-
क वर्ग -क, ख, ग, घ, ड़ (कंठ से)
च वर्ग -च, छ, ज, झ, ञ (तालु से)
ट वर्ग - ट, ठ, ड, ढ़, ण (मूर्धा से)
त वर्ग - त, थ, द, ध, न (दन्त से)
प वर्ग - प, फ, ब, भ, म (ओष्ठ से)

नासिक्य- जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय मुख-अवयव वायु को रोकते हैं परंतु वायु पूरी तरह मुख से न निकल कर नाक से भी निकलती है उन्हें नासिक्य व्यंजन कहते हैं। ड़, ञ, ण, न, म नासिका व्यंजन है

स्पर्ष संघर्षी - जिन व्यंजन के उच्चारण में वायु पहले किसी मुख-अवयव से स्पर्श करती है, फिर रगड़ खाते हुए बाहर निकलती है उन्हें स्पर्षी संघर्षी व्यंजन कहते हैं।
च, छ, ज, झ स्पर्ष संघर्शी व्यंजन हैं।

संघर्षी - जिन व्यंजनों का उच्चारण एक प्रकार की रगड़ या घर्षण से उत्पन्न ऊष्मा वायु से होता है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। यह चार है - ष, श, स, ह । इन्हें ही संघर्षी व्यंजन भी कहते हैं।

उत्क्षिप्त- उत्क्षिप्त शब्द का अर्थ है उछाला हुआ या फेंका हुआ। जिन व्यंजनों के उच्चारण में जीभ का अग्रभाग मूर्धा को स्पर्ष करके झटके से वापस आता है उन्हें उत्क्षिप्त व्यंजन कहते हैं। ड़, ढ़ उत्क्षिप्त व्यंजन हैं।

अतःस्थ - स्वरों और व्यंजनों के मध्य स्थित होने के कारण य, र, ल, व को अंतस्थ व्यंजन कहा जाता है। अंतस्थ व्यंजनों का विभाजन निम्न है-

पार्श्विक - पार्श्विक का अर्थ है-बगल का। जिस ध्वनि के उच्चारण में जिह्वा श्वास वायु के मार्ग में खड़ी हो जाती है और वायु उसके अगल-बगल से निकल जाती है, उसे पार्श्विक व्यंजन कहते हैं। 'ल' पार्श्विक व्यंजन है।

प्रकंपित - प्रकंपित का अर्थ है कांपता हुआ। जिस व्यंजन के उच्चारण में जिह्वा की नोक वायु से रगड़ खाकर कांपती रहती है उसे प्रकंपित व्यंजन कहते हैं। 'र' प्रकंपित व्यंजन है।

पुस्तकों तथा समाचारों के नाम- रामचरित मानस, ऋग्वेद, धर्मयुग, इण्डियन नेशन ।

ऐतिहासिक युद्धों और घटनाओं के नाम- पानीपत की पहली लड़ाई, सिपाही -विद्रोह, अक्तूबर -क्रांति ।

दिनों महीनों के नाम- मई, अक्टूबर,जुलाई, सोमवार, मंगलवार ।

त्योहारों उत्सवों के नाम- होली, दीवाली, रक्षाबन्धन, विजयादशमी ।

(2) जातिवाचक संज्ञा :- जिस शब्द से एक जाति के सभी प्राणियों अथवा वस्तुओं का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

बच्चा, जानवर, नदी, अध्यापक, बाजार, गली, पहाड़, खिड़की, स्कूटर आदि शब्द एक ही प्रकार प्राणी, वस्तु और स्थान का बोध करा रहे हैं। इसलिए ये जातिवाचक संज्ञा' हैं।

जैसे - लड़का, पशु-पक्षियों वस्तु, नदी, मनुष्य, पहाड़ आदि।

'लड़का' से राजेश, सतीश, दिनेश आदि सभी 'लड़कों का बोध होता है।

'पशु-पक्षियों से गाय, घोड़ा, कुत्ता आदि सभी जाति का बोध होता है।

'वस्तु' से मकान, कुर्सी, पुस्तक, कलम आदि का बोध होता है।

'नदी' से गंगा यमुना, कावेरी आदि सभी नदियों का बोध होता है।

'मनुष्य' कहने से संसार की मनुष्य-जाति का बोध होता है।

'पहाड़' कहने से संसार के सभी पहाड़ों का बोध होता हैं।

(3) भाववाचक संज्ञा:-

थकान, मिठास, बुढ़ापा, गरीबी, आजादी, हँसी, चढ़ाई, साहस, वीरता आदि शब्द-भाव, गुण, अवस्था तथा क्रिया के व्यापार का बोध करा रहें हैं।

इसलिए ये 'भाववाचक संज्ञाएँ' हैं।

इस प्रकार-जिन शब्दों से किसी प्राणी या पदार्थ के गुण, भाव, स्वभाव या अवस्था का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे- उत्साह, ईमानदारी, बचपन, आदि । इन उदाहरणों में 'उत्साह' से मन का भाव है। 'ईमानदारी' से गुण का बोध होता है। 'बचपन' जीवन की एक अवस्था या दशा को बताता है। अतः उत्साह, ईमानदारी, बचपन, आदि शब्द भाववाचक संज्ञाए हैं। हर प्रदार्थ का धर्म होता है। पानी में शीतलता, आग में गर्मी, मनुष्य में देवत्व और पशुत्व इत्यादि का होना आवश्यक है। पदार्थ का गुण या धर्म प्रदार्थ से अलग नही रह सकता। घोड़ा है, तो उसमें बल हैं, वेग है और आकार भी है। व्यक्तिवाचक संज्ञा की तरह भाववाचक संज्ञा से भी किसी एक ही भाव का बोध होता है। 'धर्म, गुण, अर्थ और 'भाव' प्रायः पर्यायवाची शब्द हैं। इस संज्ञा का अनुभव हमारी इन्द्रियों को होता है और प्रायः इसका बहुवचन नहीं होता।

भाववाचक संज्ञाएँ बनाना:-

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, विशेषण, क्रिया, सर्वनाम और अव्यय शब्दों से बनती हैं। भाववाचक संज्ञा बनाते समय शब्दों के अंत में प्रायः पन, त्व, ता आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

(1) जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा बनाना:-

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
स्त्री-	स्त्रीत्व	भाई-	भाईचारा

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
मनुष्य-	मनुष्यता	पुरुष-	पुरुषत्व, पौरुष
शास्त्र-	शास्त्रीयता	जाति-	जातीयता
पशु-	पशुता	बच्चा-	बचपन
दनुज-	दनुजता	नारी-	नारीत्व
पात्र-	पात्रता-	बूढा-	बुढ़ापा
लड़का-	लड़कपन	मित्र-	मित्रता
दास-	दासत्व	पण्डित-	पण्डिताई
अध्यापक-	अध्यापन	सेवक-	सेवा

(2) विशेषण से भाववाचक संज्ञा बनाना:-

विशेषण	भाववाचक संज्ञा	विशेषण	भाववाचक संज्ञा
लघु-	लघुता, लघुत्व, लाघव	वीर-	वीरता, वीरत्व
एक-	एकता, एकत्व	चालाक-	चालाकी
ख़ट्टा-	खटाई	गरीब	गरीबी
गंवार	गंवारपन	पागल	पागलपन
बूढा	बुढ़ापा	मोटा	मोटापा
नबाव	नबावी	दीन	दीनता,दैन्य
बड़ा	बड़ाई	सुंदर	सौंदर्य, सुंदरता
भला	भलाई	बुरा	बुराई
ढीठ	ढिठाई	चौड़ा	चौड़ाई
लाल	सरलता सारल्य	आवश्यकता	आवश्यकता
परिश्रमी	परिश्रम	अच्छा	अच्छाई
गंभीर	गंभीरता, गांभीर्य	सभ्य	सभ्यता
स्पष्ट	स्पष्टता	भावुक	भावुक

अधिक	अधिकता, आधिक्य	अधिक	अधिकता
सर्द	सर्दी	कठोर	कठोरता
मीठा	मिठास	चतुर	चतुराई
सफेद	सफेदी	श्रेष्ठ	श्रेष्ठता
मूर्ख	मूर्खता	राष्ट्रीय	राष्ट्रीयता
खोजना	खोज	सीना	सिलाई
जीतना	जीत	रोना	रुलाई
लड़ना	लड़ाई	पढ़ना	पढ़ाई
चलना	चाल, चलन	पीटना	पिटाई
देखना	दिखावा,दिखावट	समझना	समझ
सींचना	सिंचाई	पड़ना	पड़ाव
पहनना	पहनावा	चमकना	चमक
लूटना	लूट	जोड़ना	जोड़
घटना	घटाव	नाचना	नाच
बोलना	बोल	पूजना	पूजन
झूलना	झूला	जोतना	जुताई
कमाना	कमाई	बचना	बचाव
रुकना	रुकावट	बनना	बनावट
मिलना	मिलावट	बुलाना	बुलावा
भूलना	भूल	छापना	छापा, छपाई
बैठना	बैठक, बैठकी	बढ़ना	बाढ़
घेरना	घेरा	छींकना	छींक
फिसलना	फिसलन	खपना	खपत
रँगना	रंगाई, रंगत	मुसकारना	मुसकान
उड़ना	उड़ान	घबराना	घबराहट
मुड़ना	मोड़	सजाना	सजावट
चढ़ना	चढाई	बहना	बहाव
मारना	मार	दौड़ना	दौड़
गिरना	गिरावट	कूदना	कूद

अंत	अंतिम, अंत्य	अर्थ	आर्थिक
अवश्य	आवश्यक	अंश	आंशिक
अभिमान	अभिमानी	अनुभव	अनुभवी
इच्छा	ऐच्छिक	इतिहास	ऐतिहासिक
ईश्वर	ईश्वरीय	उपज	उपजाऊ
उन्नति	उन्नत	कृपा	कृपालु
कुल	कुलीन	केंद्र	केंद्रीय
क्रम	क्रमिक	कागज	कागजी
किताब	किताबी	काँटा	कँटीला
कंकड़	कंकड़ीला	कमाई	कमाऊ
क्रोध	क्रोधी	आवास	आवासीय
आसमान	आसमानी	आयु	आयुष्मान
आदि	आदिम	अज्ञान	अज्ञानी
अपराध	अपराधी	चाचा	चचेरा
जवाब	जवाबी	जहर	जहरीला
जाति	जातीय	जंगल	जंगली
झगड़ा	झगड़ालू	तालु	तालव्य
तेल	तेलहा	देश	देशी
दान	दानी	दिन	दैनिक
दया	दयालु	दर्द	दर्दनाक
दूध	दुधिया,	धन	धनी, धनवान
धर्म	धार्मिक	नीति	नैतिक
खपड़ा	खपड़ैल	खेल	खिलाड़ी
खर्च	खर्चीला	खून	खूनी
गाँव	गँवारू,	गठन	गठीला
गुण	गुण,	घर	घरेलू
घमंड	घमंडी	घाव	घायल
चुनाव	चुणनोंदा, चुनावी	चार	चौथा
पश्चिम	पश्चिमी	पूर्व	पूर्वी

❖ **पर्यायवाची शब्द (SYNONYMS)**

इसे प्रतिशब्द भी कहते हैं। जिन शब्दों के अर्थ में समानता होती है, उन्हें हम पर्यायवाची शब्द अथवा प्रतिशब्द कहते हैं। हिन्दी में तत्सम पर्यायवाची शब्द ही अधिक पाए जाते हैं जो संस्कृत से हिन्दी में आए हैं। हिन्दी में तद्भव पर्ययवाची शब्दों का अभाव है। कुछ प्रमुख पर्यायवाची शब्दों के उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं –

		(अ)
शब्द		**पर्याय**
अमृत	-	पीयूष, सुधा, अमी
अंग	-	अवयव, भाग, हिस्सा, अंश, खंड।
अग्नि	-	आग, पावक, अनल, वहिन, हुताशन, कृशानु, वैश्वानर।
अनी	-	सेना, फौज, चमू, कटक, दल।
असुर	-	दनुज, दानव, दैत्य, राक्षस, निशिचर, निशाचर, रजनीचर।
अरण्य	-	जंगल, वन, कानन, विपिन।
अश्व	-	घोड़ा, वाजि, हय, घोटक, तुरग।
अंकुर	-	अँखुआ, कोंपल,कल्ला,नवोद्भिद्
अंचल	-	पल्ला, पल्लू, आँचल।
अंत	-	समाप्ति, अवसान, इति, उपसंहार
अंत	-	फल, अंजाम. परिणाम. नतीजा।
शब्द	-	**पर्याय**
अचल	-	पर्वत, पहाड़, गिरि, शैल, स्थावर।
अचला	-	पृथ्वी, धरती, धरा, भू, इला, अवनी
अतिथि	-	अभ्यागत, मेहमान, पाहुना।
अधर	-	ओंठ, ओष्ठ, लब, रद्-पट, होंठ।
अनंग	-	कामदेव, मदन, मनोज, मयन, मन्मथ
अनल	-	'अग्नि'।
अनाज	-	अन्न, धान्य, शस्य।
अनिल	-	हवा, वायु, पवन, समीर, वात, मरुत्।
अनुकम्पा	-	कृपा, मेहरबानी, दया।
अन्वेषण	-	अनुसन्धान, खोज, शोध, जाँच।
अपना	-	निज, निजी, व्यक्तिगत।
अपर्णा	-	पार्वती, शिवा, उमा, भवानी, भैरवी
अपमान	-	तिरस्कार, अनादर, निरादर।
अप्सरा	-	देवांगना, सुरबाला, सुरनारी, सुरकन्या, देवबाला, देवकन्या।

अबला	-	नारी, गृहिणी, महिला, औरत, स्त्री
अभय	-	निर्भय, निर्भीक, निड़र, साहसी।
अभिप्राय	-	तात्पर्य, आशय, मंतव्य।
अँगुली	-	आँगुलिका, अँगुली, उँगली, दधिती, शक्वरी
अँगूठी	-	अंगुली, अंगुलिका, अंगुलीय, छल्ला, छाप, मुँदरी, मुद्रिका
अंकक	-	आमूल्यक, मूल्य-निरूपक, मूल्यांकक, मूल्यांकनकर्ता
अंकुर	-	कलिका, कोपल, नवपल्लव, अँखुआ, अंगुसा।
अंगभू	-	अंगज, अंगभूत, आत्मज, तनय, धेवता, नंदन नकुल, सुअन, सुत।
अन्तरिक्ष	-	आकाश, उच्चाकाश, खमध्य, महाकाश, महाव्योम।
अंतर्धान	-	अदृश्य, ओझल, गायब, छूमंतर, तिरोभूत, तिरोहित, लुप्त।
अंदु	-	घुंघरू, झाँझ, नूपुर, पाजेब, पादांगद, पायल, बंधन, बेडी।
अंधकार	-	तम, तिमिर, अँधियारा, अँधेरा, रात, तमिस्र।
अंधा	-	चक्षुहीन, दृष्टिहीन, नेत्रहीन
अंश	-	अंग, अवयव, उद्धारण, घटक, चित्रांश, शरीर, सोपान, हिस्सा।
अकड़	-	अनम्य, अंहकार, घमंड, दंभ, दर्प, धृष्टता, हठ।
अकस्मात्	-	अचानक, एकाएक, सहसा
अकाट्य	-	अखंडनीय,अंदृश्य,अनुल्लंघनीय, अभंज्य, स्वयंसिद्ध।
अकिंचन	-	दरिद्र, निर्धन, अगतिक, अनुपाय, असहाय, कंगाल, गरीब, अक्षकीलक, कीली, धुरा, धुरी।
अक्षत	-	अनुल्लंघित, अभंजित, अविभक्त, कौमार्यवान।
अक्षय	-	अनंत, अमर, शाश्वत, अपरिवर्तनीय, सनातन।
अक्षुण्ण	-	अनष्ट, अभन्जित, अमर, अविकृत, अविभक्त, पवित्र।
अगाध	-	अमित, असीम, निस्सीम, अतुल, अकूत, अगणनीय।
अग्नि	-	अनल, अरुण, अशनि, आँच, आग, कृशानु, जातवेद, ज्वाला, दहन, धनजंय,

		पवि, पावक, रोहिताश्व, वहनि, वायुसुख, वैश्वानर, शिखी, समिध, छूतभुक, हुतवहा, हुताशन
अग्राह्य	-	अपाच्य, निषिद्ध, अनाहार्य, अस्वीकार्य
अचिर	-	अल्पजीवी, क्षणभंगुर, क्षणिक।
अचल	-	अटल, अडिग, अवहनीय, अविचल, दृढ, निश्चल, स्थावर, स्थिर ।
अच्युत	-	अटल, अनष्ट, अमर, ईश्वर, विष्णु
अजीव	-	अद्भुत, अनोखा, विचित्र, विलक्षण
अज्ञ	-	अज्ञानी, नासमझ, मंदधी, मूढ, मुर्ख
अज़	-	दुःख, पीड़ा, मातम, शोक, अबोध
अतिथि	-	अभ्यागत, आगंतुक, आगत, गृहागत, पाहुन, मेहमान ।
अतुल	-	अनुपम, अद्वितीय, बेनजीर, बेजोड़, बेमिसाल
अत्याचार	-	अपकार, उत्पात, जुल्म, नृशंसता, अन्याय
अथ	-	आदि, आरम्भ, प्रारंभ
अधर	-	ओठ, ओष्ठ, रदपुट, लब
अधर्मी	-	कुत्सित, क्षुद्र, घटिया, निकृष्ट, नीच, पतित
अधिकार	-	अर्हता, आधिपत्य, कब्जा, दावा, स्वामित्व, हक ।
अधीन	-	अवलंबित, आश्रित, निर्भर, परवश, मातहत, वशीभूत
अधीर	-	आकुल, आतुर, उद्विग्न, विकल, व्यग्र
अनाथ	-	दीन, नाथहीन, निराश्रित, बेसहारा, यतीम
अनार	-	दाड़िम, रामबीज, शुकप्रिय, शुकोदन
अनिवार्य	-	अटल, अपरिहार्य, बाध्यकर
अनी	-	कण, कुशाग्र, छोर, धार, नोक
अनुकरण	-	अनुगमन, अनुवर्तन अनुसरण, नकल
अनुग्रह	-	इनायत, कृपा, दया, स्नेह
अनुदार	-	असहनशील, कठोर, निर्दय, मतांध, स्वार्थी
अनुपम	-	अतुल, अद्भुत, अद्वितीय, अनूठा, अनूप, अनोखा, निराला
अनुमान	-	अंदाज, कयास
अन्वेषक	-	अनुसंधानकर्ता, आविष्कर्ता, पुरातत्ववेता

अन्वेषण	-	अनुसंधान, खोज, गवेषण, जाँच, विश्लेष्ण, शोध ।
अपमान	-	अनादर, अवज्ञा, अवमान, तिरस्कार, बेइज्जती ।
अभिजात	-	कुलीन, योग्य, विशिष्ट, संभ्रांत ।
अभिप्राय	-	आशय, उद्देश्य, तात्पर्य, मंशा, मतलब
अमृत	-	अमिय, अमी, पीयूष, सुधा, सुरभोग, सोम
अरण्य	-	वन, विपिन, कान्तार, कानन, अटवी
अर्जुन	-	गाण्डीवधारी, गुडाकेश, धनंजय, पार्थ, सव्यसाची
अवनति	-	उतार, गिरावट, अपकर्ष, घटाव, ह्रास ।
अश्व	-	घोटक, घोड़ा, तुरंग, बाजी, सैंधव, हय
असुर	-	दनुज, दानव, दैत्य, निशाचर, रजनीचर, तमचर, राक्षस, सुरारि
अस्त	-	अदृश्य, ओझल, गायब, तिरोहित, लुप्त
अहंकार	-	अभिमान, गुमान, गरूर, घमंड, दंभ, दर्प
		(आ)
आँख	-	नयन, नेत्र, लोचन, चक्षु, दृग ।
आम	-	आम्र, रसाल, सहकार, अमृतफल ।
आग	-	अग्नि ।
आकाश	-	व्योम, गगन, अम्बर, नभ, आसमान, अनन्ता ।
आनन्द	-	मोद, प्रमोद, आमोद, हर्ष, आह्लाद, उल्लास ।
आकांक्षा	-	अभिलाषा ।
आँधी	-	तूफान, अंधड़, बवंड़र ।
आर्त	-	दुखी, उद्वितन, खिन्न, क्षुब्ध, कातर, संतप्त, पीड़ित ।
आर्यावर्त्त	-	भारत, हिन्द, हिन्दुस्तान, इंडिया।
आस्था	-	आदर, महत्व, मानं, कद्र ।
आहार	-	भोजन, खुराक, खाना ।
आँसू	-	अश्रु, नयननीर, नेत्रनीर, नेत्रवारि
आक्षेप	-	अभियोग, आरोप, इल्जाम, दोषारोपण ।
आगार	-	खान, भंडार, संग्रह, स्त्रोत
आघात	-	आक्रमण, चोट, ठोकर, प्रहार।
आचरण	-	व्यवहार, शिष्टाचार, सदाचार, बरताव ।
आज्ञा	-	निर्देश, आदेश, हुक्म, फरमान, अनुज्ञा, अनुमति, इजाज़त ।

अध्याय – 5

सन्धि

सन्धि का अर्थ होता है - मेल और विलोम - विग्रह ।

- आपसी निकटता के कारण दो वर्णों के मेल से उत्पन्न विकार (परिवर्तन) को सन्धि कहते हैं।

जैसे - हिम + आलय = हिमालय

जगत् + नाथ = जगन्नाथ

निः + धन = निर्धन

सन्धि के भेद

1. स्वर सन्धि
2. व्यन्जन सन्धि
3. विसर्ग सन्धि

I. स्वर सन्धि

परस्पर स्वर का स्वर के साथ मेल होने पर जो विकार उत्पन्न होता है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं।

जैसे - देव + आलय = देवालय

रमा + ईश = रमेश

एक + एक = एकैक

यदि + अपि = यद्यपि

भौ + उक = भावुक

स्वर सन्धि के भेद –

i. दीर्घ सन्धि
ii. गुण सन्धि
iii. वृद्धि सन्धि
iv. यण सन्धि
v. अयादि सन्धि

i. दीर्घ सन्धि –

नियम - यदि ह्रस्व या दीर्घ स्वर [अ इ उ] के बाद समान ह्रस्व या दीर्घ स्वर आए तो दोनों के स्थान पर दीर्घ एकादेश होता है।

जैसे- युग् + अन्तर - युगान्तर

युग् अ + अन्तर

युग् आन्तर

युगान्तर

युग् आन्तर

युग् अ + अन्तर

युग + अन्तर

जैसे - हिम् + आलय = हिमालय

हिम् आ लय

हिम् अ + आलय

हिम + आलय

जैसे - राम + अवतार = रामावतार

तथा + अपि = तथापि

मुनि + इन्द्र = मुनीन्द्र (मुनियों में श्रेष्ठ हैं जो - विश्वामित्र)

कपि + ईश = कपीश (हनुमान, सुग्रीव)

लघु + उत्तम = लघूत्तम

लघु + ऊर्मि = लघूर्मि (छोटी लहर)

भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व

सु + उक्ति = सूक्ति

कटु + उक्ति = कटूक्ति

चमू + उत्थान = चमूत्थान (चमू = सेना)

गुरु + उपदेश = गुरूपदेश

वधू + उत्सव = वधूत्सव (वधू - जिसकी शादी की तैयारियां चल रही हो)

विद्या + अर्थी = विद्यार्थी

विद्या + आलय = विद्यालय

पंच + अमृत = पंचामृत

स्व + अधीन = स्वाधीन

दैत्य + अरि = दैत्यारि (देवता इन्द्र विष्णु)

सत्य + अर्थी = सत्यार्थी

प्रेरणा + आस्पद = प्रेरणास्पद

प्र + आंगन = प्रांगण

शश + अंक = शशांक (चन्द्रमा) [शश = खरगोश, अंक: गोद]

महती + इच्छा = महतीच्छा

फणी + ईश = फणीश (शेषनाग)

रजनी + ईश = रजनीश (चन्द्रमा)

दीर्घ सन्धि की पहचान –

दीर्घ सन्धि युक्त शब्दों में अधिकांशतः आ, ई, ऊ की मात्राएँ आती हैं और इनका विच्छेद इन्हीं मात्राओं से किया जाता है।

शक + अन्धु = शकन्धु
कर्क + अन्धु = कर्कन्धु
पितृ + ऋण = पितृण
मातृ + ऋण = मातृण
} अपवाद

विश्व + मित्र = विश्वामित्र
मूसल + धार = मूसलाधार
मनस् + ईषा = मनीषा
युवत् + अवस्था = युवावस्था
} अपवाद

(ii) गुण सन्धि-

नियम (1) - यदि अ/आ के बाद इ/ई आए तो दोनों के स्थान पर 'ए' हो जाता है अर्थात्

अ/आ + इ/ई = ए = ऐ

नियम (2) - यदि अ/आ के बाद उ/ऊ आए तो दोनों के स्थान पर 'ओ' हो जाता है अर्थात्

अ/आ + उ /ऊ = ओ = औ

नियम (3) – यदि अ/आ के बाद ऋ आये तो दोनों के स्थान पर 'अर्' हो जाता है हो जाता है | अर्थात्

अ/आ + ऋ = अर्

ए ओ + अर् = गुण

अ	इ	उ	ऋ
+	+	+	+
अ	इ	उ	ऋ
=	=	=	=
आ	ई	ऊ	x - दीर्घ

जैसे - गज + इन्द्र = गजेन्द्र

गज् + अ + इन्द्र

गज् एन्द्र

गजेन्द्र

गज् ए न्द्र

गज् अ + इन्द्र

गज + इन्द्र

जैसे - मृग + इन्द्र = मृगेन्द्र (शेर)

रमा + ईश = रमेश (लक्ष्मी का पति है जो = विष्णु)

सुर + ईश = सरेश (देवताओं का स्वामी = इन्द्र)

नर + ईश = नरेश (राजा)

पर + उपकार = परोपकार

यथा + उचित = यथोचित (जितना उचित हो)

यथा + इच्छा = यथेच्छा (इच्छानुसार)

पुरुष + उत्तम = पुरुषोत्तम (मनु)

नर + उत्तम = नरोत्तम

कथा + उपकथन = कथोपकथक

गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि

महा + उदय = महोदय

सह + उदर = सहोदर (सगा भाई)

नव + ऊढ़ा = नवोढ़ा (नवविवाहिता) ऊढ़ा - युवती

राका + ईश = राकेश (रात का स्वामी = चन्द्रमा)

गुड़ाका + ईश = गुड़ाकेश (नींद का स्वामी = शिव, अर्जुन)

हृषीक + ईश = हृषीकेश (इन्द्रियों का स्वामी = विष्णु)

उमा + ईश = उमेश (शिव)

धन + ईश = धनेश (कुबेर)

हृदय + ईश = हृदयेश (कामदेव)

देव + ईश = देवेश (इन्द्र)

महा + इन्द्र = महेन्द्र (शिव)

अपवाद = प्र+ ऊढ़ = प्रौढ़

अक्ष+ऊहिनी = अक्षौहिणी (विशाल सेना)

ऋ. र् ष् - न्

ण् ↓

जैसे - राम + अयन = रामायण

प्र + मान = प्रमाण

शूर्प + नखा = शूर्पणखा

लक्ष् + मन = लक्ष्मण

जैसे- देव + ऋषि = देवर्षि

देव् + अ + ऋषि

देव् अर् षि

देवर्षि

सप्त + ऋषि = सप्तर्षि

कण्व + ऋषि = कण्वर्षि

ग्रीष्म + ऋतु = ग्रीष्मर्तु

महा + ऋषि = महर्षि

राजा + ऋषि = राजर्षि

ब्रह्म + ऋषि = ब्रह्मर्षि

वर्षा + ऋतु - वर्षर्तु

महा + ऋण = महर्ण

गुण सन्धि की पहचान –

गुण सन्धि युक्त शब्दों में अधिकांशतः ए, ओ की मात्राएँ या र् आता है र् और इनका विच्छेद इन्हीं मात्राओं से किया जाता है।

(ii) वृद्धि सन्धि –

नियम (1)- यदि अ/आ के बाद ए/ऐ आए तो दोनों के स्थान पर ऐ हो जाता है अर्थात्

अ/आ + ए/ऐ = ऐ

नियम (2)- यदि अ/आ के बाद ओ।औ आए तो दोनों के स्थान पर औ हो जाता है अर्थात्

अ/आ + ओ/औ = औ

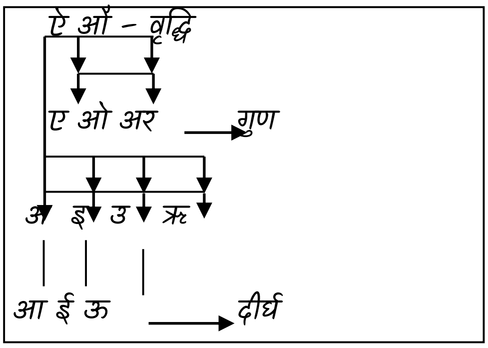

सम् + जय = सञ्जय

सम् + तोष = सन्तोष

सम् + ताप = सन्ताप

मृत्युम् + जय = मत्युञ्जय

सम् = संस्कृत

सम् = हिन्दी

सन्धि युक्त पद नहीं बनता

आलम् + कार = आलड़्कर

सम् + आचार = समाचार

सम् - उच्चय = समुच्चय

सम् + कल्प = संकल्प

सम् + गम = सड़्गम

सम् + सार = संसार

सम् + वाद = संवाद

सम् + हार = संहार

सम् + ज्ञा = संज्ञा

सम् + यम = संयम

सम् + युक्त = संयुक्त

सम् + लग्न = संलग्न

नियम (4)- यदि स् या त वर्ग के बाद श् या च वर्ग आए तो स् के स्थान पर श् तथा त वर्ग के स्थान पर क्रमशः च वर्ग हो जाता।

स् → श्

त् → च्

थ् → छ

द् → ज्

ध् → झ्

न → ञ्

जैसे - निस् + चिन्त = निश्चिन्त

उत् + चारण = उच्चारण

दुस् + शासन = दुश्शासन

सत् + जन = सज्जन (सद् + जन)

उद् + ज्वल = उज्वल (उद् + ज्वल)

सत् + चित् + आनन्द = सच्चिदानन्द

नियम (5)- यदि त् के बाद ह वर्ण आए तो त् के स्थान पर द् तथा ह के स्थान पर ध् हो जाता है।

उद् + हार = उद्धार

पद् + दति = पद्धति

तद् + हित =तद्धति

उद + हव =उद्धव

स्वर + छ → स्वर + च् + छ

जैसे - वि + छेद = विच्छेद

अनु + छेद = अनुच्छेद

आ + छादन = आच्छादन

यह सन्धि के नियम के अपवाद है

प्रति + छेद = प्रतिच्छेद

तरु + छाया = तरुच्छाया

वृक्ष + छाया =वृक्षच्छाया

लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया

नियम (6)- यदि किसी स्वर के बाद स् तथा थ् वर्ण आए तो स् के स्थान पर ष तथा थ् के स्थान पर ठ हो जाता है।

स्वर + स् + थ् स्वर → स्वर + ष + ठ

जैसे -

अनु + स्था = अनुष्ठा

प्रति + स्था = प्रतिष्ठा

अनु + स्थान = अनुष्ठान

प्रति + स्थान = प्रतिष्ठान

नि + स्थुर = निष्ठुर

प्रति + स्थित = प्रतिष्ठित

युधि + स्थित = युधिष्ठिर (युद्ध में स्थिर होता है वह)

(3) विसर्ग सन्धि –

विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन आने पर उनके मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।

जैसे - निः + आहार = निरासार

मनः + हर = मनोहर

नियम (1)- यदि विसर्ग से पहले अ को छोड़कर अन्य कोई स्वर आए तथा विसर्ग के बाद किसी भी वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण, अन्तस्थ वर्ण या कोई स्वर आए तो विसर्ग का र् हो जाता है।

जैसे -

निः	+	गुण	= निर्गुण
निः	+	आहार	= निराहार
निः	+	आशा	= निराशा
निः	+	अर्थक	= निरर्थक
निः	+	अपराध	= निरपराध
निः	+	मल	= निर्मल
निः	+	धन	= निर्धन
निः	+	बल	= निर्बल
यजुः	+	वेद	= यजुर्वेद
दुः	+	अवस्था	= दुरवस्था
दुः	+	उपयोग	= दुरुपयोग
दुः	+	आशा	= दुराशा
दुः	+	घटना	= दुर्घटना
दुः	+	गति	= दुर्गति
दुः	+	बल	= दुर्बल
दुः	+	जन	= दुर्जन
आयुः	+	वेद	= आयुर्वेद
पुन :	+	जन्म	=पुनर्जन्म → अपवाद

नियम (2)- यदि विसर्ग से पहले अ हो तथा विसर्ग के बाद किसी भी वर्ग का तीसरा, चौथा , पाँचवा वर्ण , अन्तः

अध्याय – 14

अपठित गद्यांश

गद्यांश – 1

निम्न गद्यांश को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों में सबसे उचित विकल्प चुनिए :

हमलोग जब हिन्दी की 'सेवा' करने की बात सोचते हैं, तो प्रायः भूल जाते हैं कि यह लाक्षणिक प्रयोग है। हिन्दी की सेवा का अर्थ है उस मानव समाज की सेवा, जिसके विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम हिन्दी है। मनुष्य ही बड़ी चीज है, भाषा उसी की सेवा के लिए है । साहित्य सृष्टि का भी यही अर्थ है । जो साहित्य अपने आप के लिए लिखा जाता है उसको क्या कीमत है, मैं नहीं कह सकता, परन्तु जो साहित्य मनुष्य समाज को रोग-शोक, दारिद्र्य, अज्ञान तथा परमुखापेक्षिता से बचाकर उसमें आत्मबल का संचार करता है, वह निश्चय ही अक्षय-निधि है।

- 'परमुखापेक्षिता' का अर्थ है
(1)दूसरों से आशा रखना
(2)पयारा मुख अच्छा लगना
(3)पराये मुख की अपेक्षा करना
(4) ईश्वर का मुख
उत्तर : - (1)

- कौन शब्द स्त्रीलिंग नहीं है ?
(1)सेवा (2) भाषा
(3)प्रयोग (4)हिंदी
उत्तर : - (3)

- इस गद्यांश में प्रयुक्त 'अर्थ' शब्द का अर्थ नहीं है
(1) आशय (2) मतलब
(3) धन (4) अभिप्राय
उत्तर : - (3)

- कौनसा शब्द एकवचन है ?
(1) विचारों (2) भाषाओं
(3) अक्षय (4) मनुष्यों
उत्तरः - (3)

- 'कीमत' की बहुवचन है ।
(1) कीमती (2) कीमतों
(3) किमतों (4) किम्मत
उत्तर : - (4)

- 'माध्यम' का बहुवचन है ।
(1)मध्यमा (2) माध्यमिक
(3) मध्यम (4) माध्यमों
उत्तर : - (4)

- 'अक्षय - निधि' का अर्थ है ।
(1) बिना क्षय रोग
(2) किसी का नाम
(3) कभी खत्म न होने वाली सम्पत्ति
(4) रोग रहित नहीं
उत्तरः - (3)

गद्यांश – 2

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर प्रश्न के उत्तर दीजिएः

भारत अब प्रौढ़ावस्था में आ पहुंचा है। भीषण घात-प्रतिघात से साक्षात्कार करते हुए भी उसने बहुमुखी विकास किया है, इसमें संदेह नहीं । लेकिन उसका एक प्रकोष्ठ अंधकार में अभी भी डूबा हुआ है- हृदय, जो कि मानवीय क्रिया व्यापार का नियन्ता है। इस समय वह स्वार्थपरता और भोगवाद के ऐसे रोग से ग्रसित हो गया है जिसके कारण मानवीय आचरण भी बनैला हो गया है। क्षेत्रवाद, जातिवाद, भाषावाद, सम्प्रदायवाद - प्रभृति विभिषिकाएँ जो आजादी के साथ उपहार में मिली थीं, आए दिन कहीं-न-कहीं अपनी लोमहर्षक लोला सम्पन्न करती रहती हैं। परिणामस्वरूप शिथिल पड़ते अनुशासन के बन्धन, विखण्डित होती श्रद्धा और कलंकित होता विश्वास; मानवता के लिए काँटो की सेज बन प्रस्तुत हो रहे हैं। फिर भी 21वीं सदी में प्रवेश की अधीरता हमें सर्वाधिक रही है। कतिपय लोल कपोलों की कृत्रिम रंगीनियाँ समूचे देशवासियों का पर्याय मान लेना उचित नहीं । अतः कल्पना के भव्य महलो के ध्वंसावशेषों पर यथार्थ की झोपड़ियों का निर्माण ही उचित होगा ।

- वह शब्द बताइए जिसमें संधि तथा प्रत्यय दोनों का प्रयोग हुआ है
(A) रंगोनियों (B) ध्वंसावशेषों
(C)अधीरता (D)संप्रदायवाद
उत्तरः - (B)

- इनमें से वह शब्द बताइए जिसमें समास तथा उपसर्ग का प्रयोग हुआ है ।
(A) घात-प्रतिघात (B) भारतवासियों
(C) कर्मयोगी (D) आत्मनिर्भरता
उत्तरः - (A)

- वह तत्सम शब्द बताइए जिसके साथ उपसर्ग और प्रत्यय दोनों का प्रयोग हैं।
A. मानवीय B. मानवता
C.अधीर D.विखंडित
उत्तरः- D

- कर्म तत्पुरुष समास का उदाहरण इनमें कौनसा हैं ?
  A. लोमहर्षक
  B. आत्मनिर्भरता
  C. देशवाशियों
  D. सर्वाधिक
  A

- इनमें से कौन सा शब्द तत्सम है ?
  (A) स्वतंत्रता (B) श्रद्धा
  (C) झोपड़ियों (D) आजादी
  उत्तर:- (A)

गद्यांश – 3

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर प्रश्न के उत्तर दीजिए:

आज हमारे सामने अहं सवाल यह है कि धर्म बड़ा या राष्ट्र? उत्तर में यह निर्विवाद तय होना चाहिए कि राष्ट्र बड़ा है। लेकिन साथ ही आस-पास यह भी देखना है कि राष्ट्र की मौलिक अवधारणाएँ क्या हैं ? क्या मिट्टी, पानी, नदी, पहाड़, राजा, प्रजा से ही राष्ट्र की मूर्ति बनती है ? नहीं। राष्ट्र की संपूर्ण छवि और पूरा व्यक्तित्व हजारों वर्षों की मानवीय चेतना, जीवन के शाश्वत मूल्यों और अपने धरती-आकाश में अखण्ड विश्वास से बनता है। आदमी की वैज्ञानिक और मौलिक बुलन्दियों के साथ उसके सफर में और कुछ भी मुलायम सरीखा साथ रहा है। उसको कतरा-कतरा लेकर भी एक बनने की होशियारी सिखाता रहा है। लगता-लम्हा के बीच समय के अरसों को बटोरता रहा है।

- वह शब्द बताइए जिसमें दो उपसर्गों का प्रयोग हुआ
  (A) निर्माण (B) निर्विरोध
  (C) निरीक्षक (D) निरकुंश
  उत्तर:-(A)

- इनमें से जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा का सही उदाहरण है।
  (A) दानव – दानवता (B) सर्व- सर्वस्व
  (C) चतुर – चतुराई (D) गीना – गान
  उत्तर: - (A)

- 'मौलिक' शब्द किस वाक्यांश के लिए प्रयुक्त होता है ?
  (A) मूल से मिलाकर बनाया हुआ
  (B) मूल, जो किसी की नक़ल न हो
  (C) मूल में विश्वास करना
  (D) मूल की स्थापना
  उत्तर: - (A)

- इनमें से आकाश का सही पर्याय है।
  (A) सर (B) वासव
  (C) व्योम (D) उत्पल
  उत्तर:- (C)

- 'आस – पास' शब्द में कौन – सा समास है ?
  (A) द्वंद्व (B) द्विगु
  (C) कर्मधारय (D) तत्पुरुष
  उत्तर:- (A)

गद्यांश – 4

निम्न गद्यांश का अध्ययन कीजिए तथा दिए गए प्रश्नों का सही विकल्प चुनिए-

यदि कविता का प्रधान धर्म मनोरंजन और प्रभावोत्पादकता न हो तो-उसका होना निष्फल ही समझना चाहिये। पद्य के काफिये वगैरह की जरूरत है, कविता के लिए नहीं। कविता के लिए तो ये बातें एक प्रकार से उल्टी हानिकारक हैं। तुले हुए शब्दों में कविता करने और तुक, अनुप्रास आदि ढूँढने से कवियों के विचार-स्वातन्त्रय में बड़ी बाधा आती है। पद्य के नियम कविता के लिए एक प्रकार की बेड़ियाँ हैं। उनसे जकड़ जाने से कवियों को अपनी स्वाभाविक उड़ान में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कवि का काम है कि वह अपने मनोभावों को स्वाधीनतापूर्वक प्रकट करे। पर काफिये और वजन उसकी स्वाधीनता में विघ्न डालते हैं। वे उसे अपने भावों को स्वतन्त्रता से प्रकट नहीं करने देते। काफिये और वजन को पहले ढूँढकर कवि को अपने मनोभाव तद्नुकूल गढ़ने पड़ते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि प्रधानता को अप्रधानता ग्राष्ठ हो जाती है, और एक बहुत ही गौण बात प्रधानता के आसन पर जा बैठती है। फल यह होता है कि कवि की कविता का असर जाता रहता है।

- निष्फल शब्द में संधि है
  (1) दीर्घ संधि (2) गुण संधि
  (3) व्यंजन संधि (4) विसर्ग संधि
  उत्तर : - (4)
  व्याख्या - निष्फल शब्द 'निः+फल' से मिलकर बना है। अतः यहाँ विसर्ग संधि है।

- 'कवि का काम है कि वह अपने मनोभावों को स्वाधीनतापूर्वक प्रकट करे।' रेखांकित पद में कौनसा समास है ?
  (1) अव्ययीभाव (2) तत्पुरुष
  (3) कर्मधारय (4) द्विगु
  उत्तर: - (1)
  व्याख्या - स्वाधीनतापूर्वक शब्द में अव्ययीभाव समास है।

प्रारूप और जन्मने वाले के बीच एक द्वंद्व सृजित करती हैं। प्राचीन संस्कृति के समर्थक परिवर्तन से डरकर जी तोड़ कोशिशों से यथा स्थिति बनाये रखने का यत्न करते हैं। वे स्वयं को नैतिक मूल्यों औं सभ्यता का संरक्षक घोषित कर डालते तथा न आने वाले हर प्रवाह को टालते रहते हैं। इसे परिवर्तन के समर्थक नहीं चाहते। वे पुराने मानकों और नियमों की अवज्ञा करते हैं। सामाजिक परिवर्तन की हर क्रांति एक सांकेतिक प्रारूप की मांग करती है जो अपनी जरूरतों को स्वयं व्यक्त करती है जैसे कि पुरानी, जिसे विगत युग ने रचा था अब नई शक्ति और नई तकनीक का उपयोग नहीं कर पाती। वह अपने वस्तु धारण में नये आदर्शों को प्रतिबिम्बित नहीं कर सकती। इस संदर्भ में पुरानी संस्कृतियों के समर्थक असांकेतिक और यहाँ तक कि बर्बरतापूर्ण तरीकों को अपनाते हैं जिनकी एक समय उन्होंने स्वयं उपेक्षा और भर्त्सना की थी। जब कोई शक्ति प्रगतिशील नहीं बन पाती वह दमनकारी बन जाती है। नया समाज ही संस्कृति और विज्ञान की हर शाखा में कलाकार को समूचे विकास के लिए अवसर प्रदान कर सकता है।

- 'अब नई शक्ति और नई तकनीक का उपयोग नहीं कर पाती।' रेखांकित पद है-
(1) गुणवाचक विशेषण
(2) गणनावाचक विशेषण
(3) परिमाणवाचक विशेषण
(4) उक्त कोई नहीं
उत्तर : - (1)
व्याख्या- नई शब्द गुणवाचक विशेषरण है।

- 'वे पुराने मानकों और नियमों की अवज्ञा करते हैं' यह वाक्य किस कालं का है?
(1) सामान्य वर्तमान काल
(2) अपूर्ण भूतकाल
(3) सामान्य भविष्यकाल
(4) आसन्न भूतकाल
उत्तर : - (1)
व्याख्या - क्रिया के जिस कार्य रूप का वर्तमान में होना पाया जाये वहाँ सामान्य वर्तमान काल होता है। ऐसे वाक्यों के अंत में ता है, ती है, ते हैं इत्यादि शब्द आते हैं।

- 'आगे जाने वाला' वाक्यांश के लिए एक शब्द है -
(1)अनुगामी (2) अग्रणी
(3) अग्रगामी (4) अग्रज
उत्तर : - (3)
व्याख्या - अनुगामी अनुसरण करने वाला।
अग्रणी - सबसे आगे रहने वाला। अग्रज - जो पहले जन्मा हो ।

- निम्न में से कौनसा शब्द अशुद्ध है?
(1) संस्कृति (2) अभिव्यक्ति
(3) प्रगतीशील (4) त्वरित
उत्तर : - (3)
व्याख्या- शुद्ध शब्द होगा प्रगतिशील ।

- 'प्राचीन' शब्द है
(1) विशेषण (2) क्रिया विशेषण
(3) संज्ञा (4) सर्वनाम
उत्तर : - (1)

गद्यांश – 8

निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर प्रश्न के उत्तर दीजिए :
क्रोध सब मनोविकारों से फुर्तीला है, इसी से अवसर पड़ने पर यह और मनोविकारों का भी साथ देकर उनकी तुष्टि का साधक होता है। कभी वह दया के साथ कूदता है कभी घृणा जे । एक क्रूर कुमार्गी किसी अनाथ अबला पर अत्याचार कर रहा है । हमारे हृदय में उस अनाथ अबला के प्रति दया उमड़ रही है । पर दया की अपनी शक्ति टो त्याग और कोमल व्यवहार तक होती है । यदि वह स्त्री अर्थकष्ट में होती टो उसे कुछ देकर हम अपने दया के वेग को शांत कर लेते ।

- निम्नलिखित में से 'स्त्री' शब्द का पर्यायवाची है :
(1) ईहा (2) आपना
(3) शिला (4) अबला
उत्तर: - (4)

- 'अत्याचार' शब्द में कौन – सा उपसर्ग है ?
(1) अत (2) अति
(3) अती (4) अत्य
उत्तर : - (2)

- निम्नलिखित में से भाववाचक संज्ञा है ।
(1) अपनी (2) अवसर
(3) दया (4) यह
उत्तर : - (3)

- निम्नलिखित में से किस शब्द में प्रत्यय लगा हुआ है ?
(1) वेग (2) फुर्तीला
(3) अनाथ (4) उमड़
उत्तर : - (3)

- 'मनोविकार' समास – विग्रह होगा
(1) मन से विकार
(2) मन और विकार
(3) मन का विकार
(4)मन के द्वारा विकार
उत्तर : - (3)

- कवि चिरसुख या चिर दुख क्यों नहीं चाहता है ?
  (1) चिर सुख या चिर दुख सम्भव नहीं हैं
  (2) चिर दुख असहनीय होगा
  (3) सुख की अति घातक होगी
  (4) दोनों मिलकर ही जीवन को पूर्ण बनाते हैं।
  उत्तरः - (4)

- कवि मानव के लिए किस स्थिति की कामना करता है ?
  (1) दुख और सुख परस्पर बंट जाएं
  (2) वह बहुत दुखी हो
  (3)वह दुखी नहीं हो
  (4) वह समृद्ध हो।
  उत्तर : - (1)

- इस काव्यांश में नाद सौन्दर्य की दृष्टि से कौन – सा विकल्प उपयुक्त है ?
  (1) रूपक (2) उत्प्रेक्षा
  (3)अत्यानुप्र (4)उपमा
  उत्तर : - (3)

- कवि नए सुख और दुख का साम्य किनसे बताया है ?
  (1) चाँद और सूरज
  (2) शशि और घन
  (3) दिन और रात
  (4) ठण्डा और गर्म
  उत्तर : - (3)

- इस काव्यांश के प्रमुख भाव है
  (1) वैराग्य (2) संतुलन
  (3) श्रृंगार (4) वीरता
  उत्तर : - (2)

- सुख और दुख से ध्वनि साम्य वाला शब्द है।
  (1) अविरत (2) उत्पीड़न
  (3) आँख (4) मुख
  उत्तर : - (4)

पद्यांश – 9

निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर प्रश्न के उत्तर दीजिए:

थूके, मुझ पर त्रैलोक्य भले ही थूके,
जो कोई जो कह सके, कहे, क्यों चूके ?
छीने न मातृपद किंतु भरत का मुझसे
रे राम दुहाई करूं और क्या तुझसे ?
कहते आते थे यही अभी नरदेही,
माता न कुमाता, पुत्र कुपुत्र भले ही।
अब कहें सभी यह हाय! विरुद्ध विधाता -
है पुत्र पुत्र ही रहे माता कुमाता।
बस मैंने इसका बाह्य - मात्र ही देखा,
दृढ़ हृदय न देखा मृदुल गात्र ही देखा।

- कैकयी की किस मानसिक दशा की अभिव्यक्ति उपर्युक्त काव्यांश में हो रही है ?
  (1) चिंता (2) पश्चाताप और ग्लानि
  (3) पुत्र प्रेम (4) क्रोध
  उत्तर : - (2)

- **उपर्युक्त काव्यांश का मूल भाव है –**
  (1) छीने न मातृपद किन्तु भरत का मुझसे
  (2)कहते आते थे यही अभी नरदेही
  (3)जो कोई जो कह सके
  (4)बस मैंने इसका बाह्य – मात्र ही देखा
  उत्तर : - (4)

- 'बस मैंने इसका बाह्य – मात्र ही देखा' कथन का भाव है–
  (1) कैकेयी ने भरत को समझ नहीं
  (2) वह भरत की शक्ति को पहचान गयी
  (3) भरत के मन को न समझ पायी
  (4) वह माता का कर्त्तव्य न कर सकी
  उत्तर : - (3)

- इस काव्यांश का शिल्प सौन्दर्य है
  (1) 'बाह्य – मात्र, मृदुल गात्र' जैसे तत्सम शब्दों के कारण।
  (2) सरल और सज भावावेगमयी भाषा के कारण।
  (3) 'माता न कुमाता, पुत्र कुपुत्र' उक्ति के कारण।
  (4) 'थूके, मुझ पर त्रैलोक्य भले ही थूके' उचित के कारण
  उत्तर : - (2)

पद्यांश – 10

अपठित पद्यांश - निम्नलिखित पद्यांश के आधार पर प्रश्न के उत्तर दीजिए :

युद्ध, निरन्तर युद्ध विश्व है,
युद्धों की ही एक कहानी।
शान्ति ! कहाँ है शान्ति ?
यहाँ तो नित रिपुओं से लड़ना है
नित्य उलझना समरांगण में
सीना ताने अड़ना है
भोले-भाले सीधे-सादे
नहीं यहाँ पर जीने पाते
जो लड़ते, आगे बढ़ते हैं
वे ही जीवन-गाना गाते
नहीं मिली यह शान्त बैठने
को हमको अनमोल जवानी
युद्ध, निरन्तर बुद्ध विश्व है,
युद्धों की ही एक कहानी।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

के दौरान इन सूत्रों के उपयोग से शिक्षक अपने शिक्षण कार्य को अधिक सरल, सुगम, स्पष्ट व रोचक बना सकता है।

कुछ प्रमुख शिक्षण सूत्र निम्न हैं

(i) ज्ञात से अज्ञात की ओर
(ii) सरल से जटिल की ओर
(iii) मूर्त से अमूर्त की ओर
(iv) पूर्ण से अंश की ओर
(v) विशेष से सामान्य की ओर
(vi) आगमन से निगमन की ओर

ज्ञात से अज्ञात की ओर - इसका तात्पर्य यह है कि बालकों को जो ज्ञान प्राप्त है उसी पर नए ज्ञान की नींव रखी जाए। जो कुछ छात्र जानते हैं उसी को आधार बनाकर वह सिखाना चाहिए जो वे नहीं जानते। अतः शिक्षक को सबसे पहले छात्र के पूर्व ज्ञान की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए।

सरल से जटिल की ओर - इस सूत्र के अनुसार छात्र को पहले वह सिखाना चाहिए जो वह सरलता से सीख सके। सरल से जटिल के सूत्र द्वारा छात्र एक के बाद दूसरी बात सीखने को सरलता से तैयार हो जाता है। अतः शिक्षक को चाहिए कि अपने पाठ्यक्रम को इस तरह विभाजित करे कि सरलता से जटिलता के आधार पर छात्र क्रमिक रूप से प्राप्त करता चले।

मूर्त से अमूर्त की ओर- यह भाषा शिक्षण में शब्दार्थ एवं शब्द प्रयोग सिखाने में उपयोगी शिक्षण सूत्र है। छात्र का शब्द ज्ञान मूर्त पदार्थों से संबंधित करते हुए बढ़ाया जाना चाहिए।

पूर्ण से अंश की ओर : इस सूत्र के अनुसार छात्र को जो कुछ भी सिखाया जाए उसे पहले पूर्ण रूप में सामने रखा जाए और बाद में उसके अंश को स्पष्ट किया जाए। यह सूत्र 'गैस्टाल्ट मनोविज्ञान' पर आधारित है। भाषा विकास में भी छात्र वाक्यों को एक इकाई के रूप में सीखता है और उसके अलग-अलग अंशों पर ध्यान बाद में देता है।

विशेष से सामान्य की ओर : छात्र को विशेष ज्ञान से सामान्य ज्ञान की ओर ले जाना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि पहले उदाहरण प्रस्तुत किए जाएँ और फिर उन उदाहरणों के आधार पर सामान्य नियम बनाए जाएँ।

आगमन से निगमन की ओर : इस सूत्र के अनुसार अनेक उदाहरण देकर नियम का निर्धारण किया जाता है। इस सूत्र के अनुसरण से छात्र की रुचि जाग्रत रहती है। प्रत्येक स्तर पर कार्य करने के पश्चात् उसे आगे कार्य करने की प्रेरणा मिलती है ।

भाषा शिक्षण के प्रमुख कौशल

भाषा का अर्थ

भाषा शब्द संस्कृत भाषा की भाष धातु से बना है जिसका अर्थ है - 'बोलना या कहना' । इस प्रकार भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी मनोदशा, भावों व विचारों को प्रकट करता है ।

प्लेटो ने इन शब्दों में भाषा के अर्थ को स्पष्ट किया है-' मनुष्य की आन्तरिक मनोदशा या वैचारिक शक्ति जो ध्वन्यात्मक रूप में होटो के माध्यम से प्रकट होती है उसे भाषा कहते है ।

भाषा शिक्षण के उद्देश्य:

भाषा सहित सभी विषयों के शिक्षण सम्बन्धित पूर्व निर्धारित उद्देश्य होते हैं, जिनकी अधिकतम प्राप्ति हेतु शैक्षणिक क्रियाओं का प्रभावी संगठन एवं क्रियान्वयन किया जाता है।

भाषा शिक्षण के सामान्य उद्देश्य :

शिक्षण के उद्देश्यों का वर्गीकरण सामान्य (विषय सम्बन्धी) तथा विशिष्ट (स्तरानुसार) भागों में किया जाता है, जो इस प्रकार है।

सामान्य उद्देश्य :

- भाषा शिक्षण के सामान्य उद्देश्यों के अन्तर्गत निम्न बालकों में निम्न क्षमताओं के विकास पर बल दिया जाता है -
- बालकों में भाषा सम्बन्धी मौखिक एवं लेखन क्षमताओं का विकास करना ।
- वैचारिक अभिव्यक्ति हेतु लिखित एवं मौखिक क्षमताओं का विकास करना ।
- बालकों में भाषा के प्रति रुचि जाग्रत करना ।
- बालकों में भाषा में प्रति उचित दृष्टिकोण एवं आदतों का विकास करना।

भाषा के दैनिक व्यवहारों में भाषा के कौशल की काम आते हैं। साहित्य की रचना भी कौशलों में ही होती है। भाषा के निम्न चार कौशल माने जाते हैं

(1) श्रवण कौशल (सुनना)
(2) कथन (बोलना) कौशल (अर्थात् मौखिक अभिव्यक्ति कौशल)
(3) पठन कौशल (पढ़ना)
(4) लेखन कौशल (लिखना)

श्रवण कौशल

सामान्यतः श्रवण का अर्थ किसी ध्वनि, बातचीत, वाद्य संगीत आदि के सुनने से लिया जाता है। किन्तु यह सुनने का बहुत सीमित अर्थ है । भाषा - शिक्षण के संदर्भ में 'श्रवण' का अर्थ सुनकर भाव अधिगम या भावग्रहण करना है। इसका अर्थ मात्र ध्वनियों का सुनना ही नहीं है । श्रवण में किसी कथन को ध्यानपूर्वक सुनने, सुनी हुई बात पर

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp - https://wa.link/ny6pbb 1 web.- https://shorturl.at/iiVKO

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO